अध्याय 4

ताल

जिस आधार पर गायन, वादन व नृत्य होता है, उसकी क्रिया नापने को ''ताल'' कहते है। ताल संगीत में गायन, वादन और नृत्य के समय को नापने का पैमाना है। जिस प्रकार भाषा में व्याकरण, भवन के लिये नींव की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार संगीत में ताल की आवयकता होती है। गायन– वादन व नृत्य की शोभा ताल से ही है यथा :

ताल स्तल प्रतिष्ठा यामिति घायोर्धजि स्मृति :।
गीतं, वाद्यं तथा नृत्यं यत स्ताले, प्रतिष्ठतम ।।

ताल शब्द 'तल' धातु (प्रतिष्ठा, स्थिरता) से बना है। संगीत में ताल का विशेष स्थान है, क्योकि ताल ही, गीत, वाद्य और नृत्य को आधार प्रदान करता है।

ताल इस बात की एक कसौटी है कि गाना सही है या गलत/ ताल के बिना संगीत की कल्पना भी नही की जा सकती। संगीत में समय का माप मात्रा द्वारा किया जाता है, भिन्न भिन्न मात्रानुसार भिन्न भिन्न तालों की रचना की गई है।

विभिन्न मात्राओं के विविध समूहों को 'ताल' कहते है। ताल को मापने का माध्यम 'धन वाद्य' है, जैसे– तबला, परवाबज, मृदंग, ढोलक/ ताल अनेक मात्राओं के होते है, विभाग द्वारा ताल का स्वरूप बनता है और भिन्न– भिन्न तालों की रचना होती है। भारतीय शास्त्रीय, उपशास्त्रीय तथा सुगमसंगीत की निश्चित तालें है।

ताल त्रिताल अथवा तीनताल

शास्त्रीय परिचय :

ताल त्रिताल में 16 मात्रायें होती है। चार– चार मात्राओं के चार खण्ड होते है। पहली, पांचवी और तेरहवी मात्रा पर ताली होती है। नवीं मात्रा पर खाली होती है।

16 मात्रा की यह ताल बिलंबित, मध्य एवं द्रुत तीनों लयों में बजायी जाती है। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा प्रचलित ताल है। इस ताल का प्रयोग वाद्य संगीत में मसीतखानी व रजाखानी गत में ताल त्रिताल का प्रयोग किया जाता तथा ख्याल गायन में। संगीत के प्रारंभिक विद्यार्थियों को सर्व प्रथम इसी ताल का ज्ञान कराया जाता है। इसे ''बादशाह ताल'' भी कहते है।

ताल त्रिताल का ठेका

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल	धा	धीं	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा	धा	तीं	तीं	ता	ता	धीं	धीं	धा
चिन्ह	X				2				0				3			
दुगुन	धाधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धातिं	तिंता	ताधीं	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा
	X				2				0				3			

ताल दादरा

इस ताल में छह मात्रायें होती है।

इस ताल में दो विभाग, होते है। (तीन– तीन मात्राओं के)

पहली मात्रा पर ताली होती है। चौथी मात्रा पर खाली होती है।

6 मात्राओं की यह ताल तबला, ढोलक तथा नाल पर बजाई जाती है। इस ताल को मुख्यतः सुगम–संगीत तथा ''दादरा'' नाम की उपशास्त्रीय शायन शैली के साथ बजाया जाता है।

ठेका

मात्रा	1	2	3	4	5	6
बोल	धा	धिं	ना	धा	तिं	ना
दुगुन	धाधिं	नाधा	तिंना	धाधिं	नाधा	तिंना
	X			0		

ताल कहरवा

ताल परिचय

ताल कहरवा में 8 मात्रा होती है।

इसके 2 विभाग होते है। (चार– चार मात्रा के)

पहली मात्रा पर ताली होती है। पांचवी मात्रा पर खाली होती है।

8 मात्रा की यह ताल अत्यन्त सरल, और लोकप्रिय ताल है। इसे सुगम, फिल्मी व लोक संगीत में बहुतायत में बजाया जाता है।

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8
बोल	धा	गे	न	ति	न	क	धि	न
चिन्ह	X				0			
दुगुन	धागे	नति	नक	धिन	धागे	नति	नक	धिन
चिन्ह	X				0			

ताल एकताल

ताल परिचय

यह ताल 12 मात्रा की है।

इसमें 6 विभाग होते है। (प्रत्येक विभाग में 2–2 मात्रायें)

इसमें ताली 1, 5, 9 तथा 11 वी मात्रा पर होती है।

इसमें खाली 3 और 7वी मात्रा पर होती है।

यह ताल तबले पर बजाई जाने वाली है तथा बिलंबित, मध्य और द्रुत तीनों लयों में बजाई जाने वाली ताल है।

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
ठेका	धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना	क	त्ता	धागे	तिरकिट	धिं	ना
	X		0		2		0		3		4	
दुगुन	धिंधिं	धागेतिरकिट	तू ना	कत्ता	धागेतिरकिट	धिंना	धिंधिं	धागेतिरकिट	तूना	कत्ता	धागेतिरकिट	धिंना
	X		0		2		0		3		4	

ताल चारताल (चौताल)

ताल परिचय

इस ताल में 12 मात्रा होती है।

इसमें 6 विभाग होते है। (प्रत्येक में 2–2 मात्रा होती है)

ताली 1, 5, 9 तथा 11 वी मात्रा पर लगती है।

इसमें खाली 3 और 7वी मात्रा पर होती है।

यह ताल ध्रुपद गायन के साथ बजाई जाती है यह ताल खुले बोलो की तथा परवावज वाद्य पर बजाई जाने वाली ताल है। आजकल इसे तबले पर भी बजाया जाता है।

बोल	धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
चिन्ह	X		0		2		0		3		4	
दुगुन	धाधा	दिंता	किटधा	दिंता	तिटकत	गदिगन	धाधा	दिंता	किटधा	दिंता	तिटकत	गदिगन
चिन्ह	X		0		2		0		3		4	

अभ्यासार्थ प्रश्न

1. ताल को परिभाषित कीजिये।
2. निम्नलिखित तालों का परिचय व ठेका लिखे –
   (1) त्रिताल (2) दादरा (3) कहरवा (4) एकताल
3. समान मात्रा वाली दो तालों का नाम बताईये तथा उनमें क्या समानता– विभिन्नता है। विस्तार से समझाईये।
4. परवावज वाद्य पर बजाई जाने वाली ताल कौनसी है और किस गायन, शैली के प्रयोग में आती है। बताये।

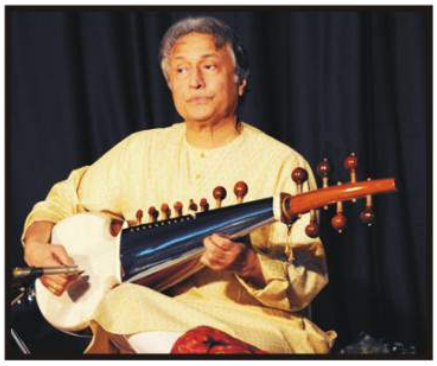

उ. अमजद अली खां
सरोद वादक

कृष्ण मोहन भट्ट
सितार वादक